NBT PAGE 10

# 'साहित्यकारों को समाज मंथन करने की जरूरत'

एलयू में शुरू हुई 'स्वतंत्रता संग्राम और हिंदी साहित्य' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी

■ एनबीटी, लखनऊः साहित्य जनमानस जगाता है और समाज को सही दिशा में ले जाता है। ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती भाषा विवि के कुलपति प्रो. अनिल शुक्ल ने शनिवार को लखनऊ विवि के मालवीय सभागार में 'स्वतंत्रता संग्राम और हिंदी साहित्य' विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में यह बात रखी। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत लविवि के हिंदी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग और उप्र हिंदी संस्थान की ओर से हुई इस संगोष्ठी में बतौर मुख्य अतिथि पहुंचे प्रो. अनिल ने कहा कि जिस तरह अमृत के लिए समुद्र मंथन करना पड़ा था, आज साहित्यकारों को भी समाज मंथन करने की जरूरत है।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित ने 1857 से 1947 तक चले जनआंदोलन में हिंदी साहित्यकारों की भूमिका के बारे में बताया। उस दौर में साहित्यकारों ने जागरण गीत, बलिदानपंथी काव्य, तिरंगा गीत, राष्ट्रीय चरित्रों के गान और गांधीवादी साहित्य लिखे। श्रीधर पाठक की काव्यपंक्ति 'जय जयति जय जय हिंद देश' सुभाष चंद्र बोस के प्रसिद्ध नारे जय हिंद का आधार बनी। प्रो. सदानंद प्रसाद गुप्त ने कहा कि जो जाति अतीत से विमुख हो जाती है, वह भविष्य नहीं निर्मित कर सकती। हमें स्वतंत्रता संबंधी लेखन के विपुल अध्ययन और पुरानी दृष्टियों से अलग पुनर्मूल्यांकन करने की जरूरत है। एनबीटी के संपादक सुधीर मिश्र ने कहा कि आखिर हम अपनी भाषा बोलने में क्यों हिचकिचाते हैं। हमें अंग्रेजों से तो आजादी मिल गई, लेकिन अंग्रेजियत से नहीं। हमें हिंदी को विज्ञान और रोजगार से जोड़ना होगा। इस दौरान प्रो. योगेंद्र प्रताप सिंह ने भी विचार साझा किए।

AMAR UJALA MY CITY PAGE 5

# लविवि : सेमेस्टर परीक्षाएं दिसंबर से प्रस्तावित

## परीक्षा समिति की कल होने वाली बैठक में लगेगी अंतिम मुहर, पहले सेमेस्टर के यूजी-पीजी विद्यार्थियों की परीक्षाएं फरवरी में

माई सिटी रिपोर्टर

लखनऊ। कोविड के कारण नया सत्र लेट होने के बावजूद लखनऊ विश्वविद्यालय की स्नातक की तीसरे व पांचवें सेमेस्टर की परीक्षाएं दिसंबर के अंत या जनवरी के पहले सप्ताह में शुरू हो जाएगी। विश्वविद्यालय प्रशासन ने इसकी तेजी से तैयारी शुरू कर दी है। हालांकि पहले सेमेस्टर के यूजी-पीजी विद्यार्थियों की परीक्षाएं फरवरी में आयोजित करने का प्रस्ताव है। इस पर अंतिम मुहर एक नवंबर को कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय की अध्यक्षता में होने वाली परीक्षा समिति की बैठक में लगेगी।

लखनऊ विश्वविद्यालय ने यूजी-पीजी दाखिले के लिए प्रवेश परीक्षा का आयोजन किया जबकि अन्य कॉलेजों ने मेरिट के आधार पर ही प्रवेश लिया है। प्रवेश परीक्षा और परिणाम में देरी की वजह से फर्स्ट ईयर की एडमिशन प्रक्रिया अब भी जारी है। इसका असर अन्य सेमेस्टर की पढ़ाई पर भी पड़ रहा है। हालांकि, 16 अगस्त से प्रथम वर्ष को छोड़कर अन्य कोर्सों की कक्षाएं शुरू हो चुकी हैं। इसे देखते हुए विश्वविद्यालय प्रशासन तीसरे व पांचवें सेमेस्टर की परीक्षाएं दिसंबर-जनवरी से शुरू करने की तैयारी में है। वहीं, पहले सेमेस्टर की परीक्षा फरवरी में प्रस्तावित की है ताकि विद्यार्थियों का कोर्स पूरा कराया जा सके। साथ ही मार्च में संभावित विधानसभा चुनाव से परीक्षाएं प्रभावित न हों।

परीक्षा समिति में परीक्षा संबंधित विषयों पर गठित समिति की संस्तुति, कोविड में प्रोन्नत किए गए छात्रों के अंक सुधार, विदेशी छात्रों के बैक पेपर की वजह से परीक्षाफल पूर्ण न होने की स्थिति में उनकी परीक्षा कराए जाने पर विचार किया जाएगा।

### आज तक जमा करनी होगी फीस

लखनऊ विश्वविद्यालय में पीजी के आधा दर्जन कोर्स में सीटों के सापेक्ष सेकंड अलॉटमेंट जारी कर दिया गया है। इसकी जानकारी विद्यार्थियों के लॉगिन पर उपलब्ध है। प्रवेश समन्वयक प्रो. पंकज माथुर ने बताया कि जूलॉजी, केमिस्ट्री/फार्मास्यूटिकल केमिस्ट्री, फिजिक्स/रिन्यूवेबल एनर्जी, साइकोलॉजी, सोशल वर्क, बायो केमिस्ट्री, बायोटेक, बॉटनी/ प्लांट साइंस का दूसरा अलॉटमेंट जारी कर दिया गया है। विद्यार्थी 31 अक्तूबर तक फीस जमा कर दें। वहीं, एमए मैथ्स, एमएससी मैथ्स, फोरेंसिक साइंस, फूड टेक्नोलॉजी एंड फूड प्रोसेसिंग, एमए स्टेटिस्टिक्स, एमएससी स्टेटिस्टिक्स की पहली कटऑफ जारी कर दी गई है। विद्यार्थी 31 अक्तूबर तक फीस जमा करा दें।

### प्रवेश समिति की बैठक भी एक को

लखनऊ विश्वविद्यालय में प्रवेश समिति की बैठक भी एक नवंबर को दोपहर 3.30 बजे से कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय की अध्यक्षता में होगी। बैठक में प्रवेश के दौरान सामने आए मुद्दों व कुछ विषयों की योग्यता को लेकर बदलाव पर चर्चा होने की संभावना है।

## छात्रावास पहुंच ताजा हुईं पुरानी यादें

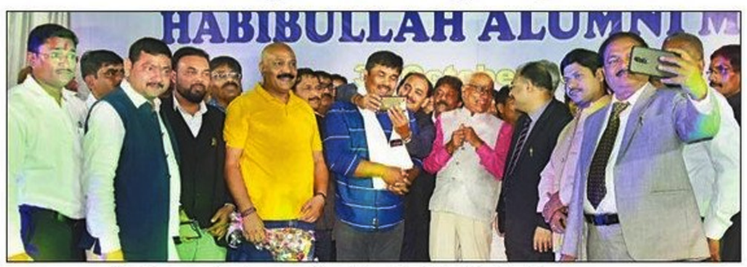


लखनऊ विश्वविद्यालय के हबीबुल्लाह हॉस्टल में एलुमिनाई मीट में पूर्व छात्रों का हुआ सम्मान। - संवाद

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के एलुमिनाई फाउंडेशन की ओर से शनिवार को हबीबुल्लाह छात्रावास में एलुमिनाई मीट का आयोजन किया गया। देर शाम आयोजित कार्यक्रम में जब पूर्व छात्र पहुंचे तो उनकी पुरानी यादें ताजा हो गईं। वे एक बार फिर अपने कमरों में गए और वर्तमान छात्रों से अनुभव साझा किए। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति एआर मसूदी थे, जो छात्रावास के कमरा नंबर एक में रहते थे। इस अवसर पर पूर्व छात्र व चीफ स्टैंडिंग काउंसिल जय कृष्ण सिन्हा, पूर्व प्रोवोस्ट प्रो. एएन सिंह समेत कर्मचारियों को भी सम्मानित किया गया। अतिथियों ने छात्रावास के विद्यार्थियों के बीच आयोजित विभिन्न खेलकूद प्रतियोगिता के विजेताओं को सम्मानित किया। विद्यार्थियों ने काव्य पाठ भी किया। प्रोवोस्ट डॉ. महेंद्र अग्निहोत्री ने अतिथियों का स्वागत किया। (माई सिटी रिपोर्टर)

**हबीबुल्लाह छात्रावास में एलुमिनाई मीट का आयोजन**

## लविवि : साहित्य से निकलेगा समाज के लिए अमृत

अनिल कुमार शुक्ल

लखनऊ। अमृत आसानी से नहीं निकला था। समाज को मथने की जिम्मेदारी साहित्यकारों की है। थोड़ा विष भी उनके हिस्से आएगा, लेकिन अंततः साहित्य से ही समाज के लिए अमृत निकलेगा। ये बातें ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अनिल कुमार शुक्ला ने कही। वह शनिवार को आजादी के अमृत महोत्सव के तहत लखनऊ विश्वविद्यालय के हिंदी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग व उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 'स्वतंत्रता संग्राम और हिंदी साहित्य' विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। उन्होंने जोर देकर कहा कि साहित्य को दरबारों की जगह जनमानस से जोड़ना होगा। अध्यक्षता कर रहे प्रो. सदानंद प्रसाद गुप्त कार्यकारी अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान ने कहा कि जो जाति अतीत से विमुख हो जाती है, वह भविष्य नहीं निर्मित कर सकती। हमें स्वतंत्रता संबंधी लेखन के विपुल अध्ययन और पुरानी दृष्टियों से अलग उनके पुनर्मूल्यांकन की आवश्यकता है। मुख्य वक्ता प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित सभापति, भारतीय हिंदी साहित्य परिषद प्रयागराज ने हिंदी और उर्दू के साहित्यकारों की रचनाओं के माध्यम से स्वदेशी आंदोलन की रूपरेखा बताई। उन्होंने कहा कि तत्कालीन साहित्यकारों के लेखन में जागरण गीत बलिदानपंथी काव्य, तिरंगा गीत, राष्ट्रीय चरित्रों के गान तथा गांधीवादी साहित्य आदि प्रचुरता के साथ उपस्थित हैं। उन्होंने पत्रकारिता को वास्तविक प्रतिपक्ष बताया। उद्घाटन सत्र को हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. योगेंद्र प्रताप सिंह, प्रो. सुधीर प्रताप सिंह, प्रो. हरीश कुमार शर्मा, प्रो. नंद किशोर पांडेय, वरिष्ठ पत्रकार सुधीर मिश्र ने संबोधित किया। संचालन प्रो. हिमांशु सेन तथा डॉ. पवन कुमार ने किया। संगोष्ठी का संयोजन प्रो. पवन अग्रवाल ने किया। (माई सिटी रिपोर्टर)

HINDUSTAN PAGE 10

# पीजी दाखिलेः दूसरे राउंड के आवंटन जारी

**लखनऊ। एलयू में पीजी दाखिलों के अंतर्गत प्रथम सीट एलॉटमेंट के बाद बची सीटों पर दूसरे राउंड का एलॉटमेंट भी जारी कर दिया गया है। जो कि अभ्यर्थी के लॉग-इन पर उपलब्ध है। इन विषयों की कटऑफ वेबसाइट के एडमिशन पेज के पोस्ट ग्रेजुएट प्रोग्राम में जारी कर दी गई है। जिन अभ्यर्थियों को सेकंड एलॉटमेंट में सीट एलॉट हुई है उनकी योग्यता की जांच ऑनलाइन की जाएगी। छात्रों को रविवार को फीस भी जमा करनी है। जूलॉजी, केमिस्ट्री/ फार्मासिटिकल केमिस्ट्री, साइकोलॉजी, सोशल वर्क, बायोकेमिस्ट्री, बायोटेक, बॉटनी/प्लांट साइंस शामिल हैं।**

DAINIK JAGRAN PAGE 12

## 'एक प्याली के लिए इतना चलाते हैं, इनको वोट दें या इनकी चाय पीयें'

लखनऊ विश्वविद्यालय में आयोजित एलुमनाई मीट में पूर्व छात्रों के साथ जस्टिस एआर मसूदी, कैसी जैन, चीफ स्टैंडिंग काउंसिल जयकृष्ण सिन्हा, अनिल सिंह सहित कई अन्य ● जागरण

जासं, लखनऊः हबीबुल्लाह छात्रावास की एलुमिनाई मीट में जुटे पुरातन छात्रों ने अपने-अपने दिनों की यादें ताजा कीं। उन दिनों चाय और खाने को लेकर पैदा होने वाली विषम परिस्थितियों का जिक्र किया। उसे पाने के लिए की जाने वाली जिद्दोजहद के संस्मरण सुनाए तो लोग ठहाका मारने को मजबूर हो गए।

हास्टल के एक नंबर कमरे में रहे पुरातन छात्र जस्टिस एआर मसूदी ने बताया कि उन दिनों चाय के लिए विश्वविद्यालय का चुनावी मौसम सबसे अच्छा होता था। तब चुनाव की तैयारी कर रहे नीरज जैन हास्टल आए, कहने लगे कि चलो चाय पिलाते हैं लेकिन वोट हमें ही देना। जब पता चला कि चाय के लिए हबीबुल्लाह हाल से चारबाग तक चलना पड़ेगा तो कुछ साथी चल दिए। उनमें से कई तो आधे रास्ते से ही लौट आए। लेकिन मैं और एक दो साथी चारबाग तक गए। लौटने पर कहते थे कि 'एक प्याली चाय के लिए इतना चलाते हैं इनको वोट दें या इनकी चाय पीयें'। हाथ तंग था, ऐसे में चाय की प्याली को अक्सर ही चुनना पड़ता था। जस्टिस मसूदी ने आर्थिक तंगी से जुड़े कई और संस्मरण सुनाए लोग अपनी हंसी नहीं रोक सके। कार्यक्रम में वर्ष 64 से 68 के बीच हास्टल में रहे जय कृष्ण सिन्हा समेत कई वरिष्ठ साथियों का सम्मान किया गया। इस दौरान हॉस्टल चलाने वाले कर्मियों समेत करीब 16 लोगों को सम्मानित किया गया। एल्युमिनाई फाउंडेशन की चेयरमैन अलुमनाई फाउंडेशन प्रो. निशि पांडेय, प्रोवोस्ट डा. महेंद्र अग्निहोत्री, संचालन अनिल सिंह बीरू ने किया।

JAGRAN CITY PAGE II

# आठ नवंबर से सीधे दाखिले

**बीएड प्रवेश**

जासं, लखनऊ : लवि बीएड पाठ्यक्रम में दाखिले के लिए पूल काउंसलिंग की प्रक्रिया खत्म होने के बाद आठ नवंबर से सीधे दाखिले का मौका देगा। इसमें वही अभ्यर्थी पात्र होंगे, जिन्हें अभी तक विश्वविद्यालय की ओर से कोई भी सीट आवंटित नहीं हो पाई है। इस संबंध में अगले सप्ताह विस्तृत निर्देश जारी किए जाएंगे।

लवि ने 17 सितंबर को बीएड पाठ्यक्रम में दाखिले के लिए प्रथम चरण की काउंसलिंग शुरू की थी। चार बार मौका देने के बाद भी 1,19,284 सीटें खाली रह गईं तो पूल काउंसलिंग के माध्यम से सीटें भरने की प्रक्रिया शुरू की गई। इसमें 18,305 अभ्यर्थियों को सीट आवंटित कर 30 अक्टूबर तक महाविद्यालयों में प्रवेश का मौका दिया गया था। राज्य संयुक्त बीएड प्रवेश परीक्षा की राज्य समन्वयक प्रो. अमिता बाजपेयी ने बताया कि अब खाली सीटों के आंकड़े इकट्ठा करने के बाद आठ नवंबर से सीधे दाखिले के लिए काउंसलिंग होगी।

**कालेज पहुंच कर पूरी करें प्रक्रिया :** सीधे दाखिले के लिए वही अभ्यर्थी पात्र होंगे, जिन्होंने प्रवेश परीक्षा दी है और उन्हें रैंक आवंटित हो चुकी है। साथ ही, अब तक किसी भी चरण की काउंसलिंग में उन्हें कोई सीट आवंटित न हुई हो। ऐसे अभ्यर्थी आठ नवंबर को आसपास के कालेज में जाकर विश्वविद्यालय के पोर्टल पर पंजीकरण कर प्रवेश प्रक्रिया पूरी कर सकते हैं। उन्हें पूरी फीस तत्काल जमा करनी होगी। राज्य समन्वयक ने बताया कि यदि किसी अभ्यर्थी ने आवेदन फार्म में ईडब्ल्यूएस कोटा भरा है तो उन्हें मौका दिया जाएगा।

AMRIT VICHAR PAGE 4

## फीस जमा करने का समय समाप्त

सत्र 2021-22 की परास्नातक प्रवेश के अंतर्गत सीट चयन होने के बाद चल रही फीस जमा करने की प्रक्रिया शनिवार को पूरी हो गयी। अब जिन छात्रों ने फीस नहीं जमा की है उनका प्रवेश निरस्त माना जायेगा, वहीं छात्र का कोई दावा भी नहीं मान्य किया जायेगा। दरअसल इससे पहले फीस जमा करने की अंतिम तिथि 26 अक्टूबर थी, जिसके बढ़ाकर 31 अक्टूबर किया गया था, ऐसे में अब फीस जमा करने की तिथि भी नहीं बढ़ायी जायेगी।

### नियम में होगा तभी मिलेगा प्रवेश

स्नातक की चल रही प्रवेश प्रक्रिया में सिफारिशों भी खूब आ रही है, कोई चिट्ठी ला रहा है तो कोई सीधे फोन से बात करवा दे रहा है। वहीं अधिकारी सबको यह बताते—बताते परेशान हैं कि सभी आवेदन आनलाइन हैं, कटआफ वेबसाइट पर है, ऐसे में नियम में आ रहा होगा तभी प्रवेश मिल सकेगा।

### गवर्नर भी कहें तो भी लिमिट रखनी पड़ेगी

कई विषयों में सीटे फुल होने के बाद भी छात्र विषय बदलवाने की होड़ में लगे हुए है, शनिवार को एक दर्जन छात्रों ने अधिकारियों से बहस की, जिस पर अधिकारियों ने मना कर दिया, बात कुछ इतनी बढ़ गयी कि अधिकारियों को कहना पड़ा कि गर्वनर भी कह दें तो भी कहीं न कहीं लिमिट रखनी पड़ेगी।

### साहित्यकारों ने माना अपनी जिम्मेदारी

अमृत महोत्सव श्रंखला के अंतर्गत शनिवार को हिन्दी व आधुनिक भारतीय भाषा विभाग की ओर से राष्ट्रीय संगोष्ठी में साहित्यकारों ने माना कि समाज को मथने की उनकी जिम्मेदारी है। हिन्दी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष सदानंद प्रसाद गुप्ता ने कहा कि जो जाति अतीत से विमुख हो जाती है वह भविष्य नहीं निर्मित कर सकती। मुख्य वक्ता प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित, सभापति भारतीय हिंदी साहित्य परिषद् ने कहा तत्कालीन साहित्यकारों के लेखन में जागरण गीत बलिदानपंथी काव्य, तिरंगा गीत, राष्ट्रीय चरित्रों के गान तथा गांधीवादी साहित्य आदि प्रचुरता के साथ उपस्थित हैं।

SWATANTRA BHARAT PAGE 4

# आजादी की लड़ाई को साहित्यकारों ने दी चेतना

स्वतंत्रभारत संवाददाता,लखनऊ।

आजादी का अमृत महोत्सव श्रंखला के अंतर्गत शनिवार को हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ और उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में 'स्वतन्त्रता संग्राम और हिंदी साहित्य' विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी की शुरुआत की गई। आयोजन के मुख्य अतिथि प्रो. अनिल कुमार शुक्ल, कुलपति महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, अजमेर ने कहा कि अमृत आसानी से नहीं निकला था, इसके लिए समाज को मथने की जिम्मेदारी साहित्यकारों की है। थोड़ा विष भी सही लेकिन अन्ततः साहित्य से अमृत ही निकलेगा। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. सदानंद प्रसाद गुप्त, कार्यकारी अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान ने कहाकि जो जाति अतीत से विमुख हो जाती है वह भविष्य नहीं निर्मित कर सकती। उन्होंने स्वतंत्रचेता साहित्यकारों का महत्व बताते हुए कहाकि अपनी रचनाओं के माध्यम से वे जनमानस की भाषाएं साहित्य परम्परा का स्वरूप बोध विकसित करते हैं। मुख्य वक्ता प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित, सभापति भारतीय हिंदी साहित्य परिषद्, प्रयागराज ने हिन्दी और उर्दू के साहित्यकारों की रचनाओं के माध्यम से स्वदेशी आंदोलन की रूपरेखा बताई। उन्होंने कहाकि तत्कालीन साहित्यकारों के लेखन में जागरण गीत बलिदानपंथी काव्य, तिरंगा गीत, राष्ट्रीय चरित्रों के गान तथा गांधीवादी साहित्य आदि प्रचुरता के साथ उपस्थित हैं। श्रीधर पाठक की काव्यपंक्ति जयति जयति जय जय हिंद देश का संदर्भ देते हुए उन्होंने बताया कि यह सुभाष चंद्र बोस के प्रसिद्ध नारे जय हिंद का आधार बनी। हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो. योगेन्द्र प्रताप सिंह ने कहा कि यह आजादी का अमृत महोत्सव है और हम इसे कोटि-कोटि जन तक ले जाना चाहते हैं। प्रथम अकादमिक सत्र में प्रो. सुधीर प्रताप सिंह, दिल्ली ने छायावादोत्तर हिंदी कविता और स्वतंत्रता संग्राम पर बात रखते हुए कहा कि आलोचना के पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर उस समय की कविता में स्वतन्त्रता आन्दोलन के अप्रत्यक्ष बिंदुओं को भी देखने की जरूरत है। प्रो. हरीश कुमार शर्मा, सिद्धार्थ नगर ने कहा कि हीनत्व भाव से जनता को उबारना उस समय के कवि के सामने बड़ी चुनौती थी जिसे उन्होंने कुशलता से निभाया। सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रो. नंद किशोर पाण्डेय, जयपुर ने स्वतंत्रता आंदोलन के चार महत्त्वपूर्ण बिंदुओं का उल्लेख किया जिनमें स्वावलंबन, स्वाभिमान, समानता, स्वभाषा प्रमुख है। सत्र का संचालन हिन्दी विभाग की आचार्या प्रो. हेमांशु सेन तथा धन्यवाद ज्ञापन उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान, लखनऊ के निदेशक डॉ. पवन कुमार ने किया।